International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 144-146

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 144-146
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-05-2023
Accepted: 17-06-2023

आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

आचार्य धनञ्जय के नाट्य भेदक तत्व की दृष्टि से अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का अनुशीलन

आसुतोष कुशवाहा

सारांश
संस्कृत रचनाधर्मिता के विविध विधाओं में रूपक या नाट्य को श्रेष्ठ माना गया है। इसकी रचना को समालोचको ने कवित्व की अन्तिम सीमा कहा हैं–नाटकान्तं कवित्वम्। नाटक में गद्य–पद्य दोनों का समन्वय रहता है।इसमें श्रव्य तथा दृश्य काव्य का मिश्रण करते हुए कवि अभिनय की दृष्टि से संविधानक का प्रयोग करता है। आचार्य भरतमुनि नाटयशास्त्र (6/31) में कहते है। कि इस नाट्य संसार में सब कुछ रसमय होता है, रस के बिना यहां कुछ भी प्रवृत्त नही होता – न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते। महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् (1/4) में लिखते है कि नाट्यं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् अर्थात् कोई व्यक्ति किसी भी रूचि का क्यो न हो , उसे अपने अनुकूल विषय नाट्य जगत् में अवश्य मिल जायेगा ।प्रस्तुत शोध पत्र में कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का अनुशीलन आचार्य धनंजय के नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ दशरूपक में प्राप्त नाट्य के भेदक तीन तत्व – वस्तु , नेता और रस को लेकर किया गया है।

कूटशब्द : वस्तु, नेता, रस

प्रस्तावना
संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास प्रथम शाताब्दी ई0पू0 के कवि हैं ऐसा प्रायः विद्वानों द्वारा माना जाता है। ये चन्द्रगुप्तविक्रमादित्य के आश्रयदाता माने जाते हैं। इनकी पत्नी का नाम विद्योत्तमा मिलता है। इन्होंने प्रमुखतः सात रचनाएं की हैं जिसमें दो महाकाव्य–रघुवशंम्, कुमारसम्भवम्, दो खण्डकाव्य–ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, तीन नाटक–मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम् आदि है।
महाकवि कालिदास ने महाभारत के आदिपर्व अध्याय (37 से 74) तथा पद्मपुराण आदि ग्रन्थों की कथा को उपजीव्य के रुप में ग्रहण करते हुए अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की रचना की है। कालिदास ने महाभारत आदि के मूलकथा को नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से, सामाजिक की दृष्टि, रसपेशलता की दृष्टि से कुछ परिवर्तन करके अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक को सात अंको में निबद्ध किया है।
संस्कृत साहित्य में नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि का नाम आता है। इन्होंने एक वृहद् 36 अध्यायों का ग्रन्थ नाट्यशास्त्र लिखा है। नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में स्वंय भरतमुनि कहते हैं कि विश्व का ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग (प्रयोग) और कर्म नहीं है जो इसमें समाहित न हो।

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यत्र दृश्यते।।[1]

आचार्य भरतमुनि (द्वितीय शताब्दी ई0पू0) के बाद नाट्यशास्त्र पर परवर्ती आचार्यों नन्दिकेश्वर ने अभिनयदर्पण, सागरनन्दी ने नाटक लक्षणरत्नकोश, रामचन्द्र– गुणचन्द्र ने नाट्यदर्पण, शारदातनय ने भावप्रकाशन, रुपगोस्वामी ने नाटकचन्द्रिका तथा आचार्य धनंजय ने दशरुपकम् इत्यादि टीका ग्रन्थों की रचनाएं की।
आचार्य धनंजय ने अपने दशरुपक ग्रन्थ में नाट्य के भेदक तत्व तीन वस्तु, नेता और रस को माना है।

वस्तु नेता रसस्तेषां भेदक :।[2]

सम्प्रति महाकवि कालिदास द्वारा प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का आचार्य धनंजय के मतानुसार नाट्यभेदक तत्व वस्तु, नेता और रस की दृष्टि से अनुशीलन इस प्रकार से करते हैं –

वस्तु

नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से आचार्य धनंजय ने वस्तु को दो प्रकार से विभाजित किया है– अधिकारिक तथा प्रासंगिक कथावस्तु।

वस्तु च द्विधा।
तत्राधिकारिकं मुख्यमङ्गं प्रासङ्गिकं विदु ः।।[3]

अधिकारिक कथावस्तु में नाटक की मुख्य कथा होती है। अधिकार रुप में फल का स्वामित्व नायक में होता है वहीं प्रासंगिक कथा मुख्य कथा के साथ अंग रुप में चलती है। यह दो प्रकार की होती है–पताका और प्रकरी। पताका कथावस्तु नाटक में दूर तक चलती है इसका नायक दूसरा होता है जो मुख्य नायक से न्यून गुणों वाला होता है तथा इसके कार्य का उद्देश्य कोई स्वतन्त्र नहीं होता है। यह मुख्य नायक के फलप्राप्ति में सहायक होता है।
प्रकरी कथावस्तु नाटक में आने वाले छोटे–छोटे प्रसगों या कथानकों को कहते हैं।

अधिकारः फलस्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः।
तन्निर्वृत्तमभिव्यापि वृत्तं स्यादाधिकारिकम्।। [4]
प्रासङ्गिकं परार्थस्य स्वार्थो यस्य प्रसङ्गतः।
सानुबन्धं पताकाख्यं प्रकरी च प्रदेशभाक्।।[5]

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की कथावस्तु प्रख्यात अर्थात् इतिहास प्रसिद्ध है जो महाभारत तथा पद्मपुराण पर आधारित है। शाकुन्तल नाटक में अधिकारिक कथावस्तु के अर्न्तगत हस्तिनापुर के राजा दुष्यन्त और मेनका एवं विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला के प्रथम मिलन, वियोग तथा पुनर्मिलन वृत्तान्त को रखा जा सकता है।
पताका कथावस्तु के अन्तर्गत विदूषक का वृत्तान्त आता है जो द्वितीय अंक से लेकर षष्ठ अंक तक दिखाई पड़ता है। वहीं डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी के अनुसार पताका कथावस्तु में दुर्वासा के शाप वाला प्रसंग और अंगूठी का वृत्तान्त भी माना जा सकता है।[6]
प्रकरी कथावस्तु एक नाटक में एक से अधिक भी हो सकते हैं। इस प्रकार से मातलि का वृत्तान्त, सानुमती अप्सरा प्रसंग तथा षष्ठ अंक के प्रारम्भ में दो चेटियों के द्वारा वसन्त ऋतु का वर्णन प्रकरी के अन्तर्गत रखा जा सकता है।[7]

नेता

दशरुपकार आचार्य धनंजय ने अपने नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ में नायक के चार प्रकार बताये हैं। ये धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशान्त तथा धीरोद्धत नायक है।

भेदैश्चतुर्धा ललितशान्तोदात्तोद्धतैरयम्। [8]

महाकवि कालिदास के शाकुन्तल नाटक का नायक दुष्यन्त धीरोद्धात्त प्रकृति का है जिसमें वे सभी गुण मिलते हैं जो एक नाटक के नायक पात्र में होने चाहिए।
आचार्य धनंजय कहते हैं कि नायक विनीत, मधुर, त्यागी, चतुर, प्रिय बोलने वाला, लोकप्रिय, पवित्र, वाक्पटु, प्रसिद्ध वंश वाला, स्थिर, युवक, बुद्धि–उत्साह–स्मृति–प्रज्ञा–कला तथा मान से युक्त, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्रों का ज्ञाता और धार्मिक होना चाहिए।

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः क्षुचिर्वाग्मी रुढवंशः स्थिरो युवा।।
बुद्धयुत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।।9

नाट्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से धीरोदात्त नायक का लक्षण धनंजय देते हैं कि उत्कृष्ट अन्तःकरण वाला, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, आत्म प्रशंसा न करने वाला, स्थिर, अहंभाव को दबाकर रखने वाला दृढव्रती आदि होना चाहिए।

महासत्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाङ्गाकारो धीरोदात्तो दृढ़व्रतः।।[10]

उपर्युक्त गुणों एवं लक्षणों की दृष्टि से अनुशीलन किया जाय तो अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के नायक दुष्यन्त में ये सब गुण प्राप्त होते हैं। वह पुरुवंशी क्षत्रिय हस्तिनापुर का राजा है जो सुन्दर, मधुरभाषी, प्रजापालक, मातृभक्त, आज्ञाकारी पुत्र है। साथ ही सहृदयी, संयमी, उच्चकोटि का शासक, कर्तव्यपरायण, प्रजाप्रेमी, निर्लोभी, पराक्रमी, विनीत, प्रकृतिप्रेमी, आदर्श पतिव्रता, धार्मिक इत्यादि सभी दृष्टि से उदात्त चरित वाला है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की नायिका शकुन्तला स्वकीया नायिका है। यह अनुपम सुन्दरी, लज्जावती, पतिव्रता, आदर्श प्रेमिका, सहृदयी, बुद्धिमती, धार्मिक, प्रकृतिप्रेमी, आज्ञाकारी, पुत्रवत्सला, अच्छी सखी, इत्यादि नायक के गुणों के समान क्षत्रियकुलोत्पन्ना तथा ऋषि कण्व के द्वारा पालित आदर्श नारी पात्र है।

रस

श्रृंगार रस– अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक श्रृंगार रस प्रधान नाटक है। इसमें संभोग एवं वियोग श्रृंगार दोनों का समन्वय देखने को मिलता है। प्रथम तीन अंको में कवि कालिदास ने संभोग श्रृंगार मुख्यतः प्रयोग किया है। वही विप्रलम्भ श्रृंगार के वर्णन द्वितीय अंक में, तृतीय अंक के प्रारम्भ और अन्त में तथा पूरे षष्ठ अंक में प्रमुख रुप से दिखलाई पड़ता है।

यथा– प्रथम अंक में दुष्यन्त के हृदय में शकुन्तला के प्रति अनुराग की उत्पत्ति में श्रृंगार रस का दृश्य मिलता है।

अहो मधुरमासां दर्शनम्।
शुद्धादान्तदुर्लभमिदं0 (1/17)।

इसके अतिरिक्त पद्य 1/18, 1/20, 1/21, 1/24, 1/31, 3/16, 3/17, 3/18, 3/20, 3/21, 7/22, 7/24 इत्यादि में संयोग श्रृंगार तथा विप्रलम्भ श्रृंगार में 2/1, 2/2, 2/9, 2/10, 2/11, 2/12, 3/2, 3/3, 3/6, 3/7, 3/10, 3/11, 3/13, 14, 6/5, 6, 8, 9, 10, इत्यादि।

करुण विप्रलम्भ

शाकुन्तलम् के पंचम अंक में प्रत्याख्यान के बाद रोती हुई शकुन्तला के जाने के दृश्य में करुण विप्रलम्भ रस प्रस्फुटित हुआ है।

वसुधे देहि मे विवरम् (5 वा 105)।

वही अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के चतुर्थ अंक में प्रायः करुण रस दिखलाई पड़ता है। ऋषि कण्व द्वारा शकुन्तला के हस्तिनापुर भेजने आदि के प्रसंग में करुण रस उद्दीप्त हुआ है।
यथा–

1. यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं0 (4/6)।
2. प्रातुं न प्रथमं व्यवस्यति (4/9)।
3. उद्गलितदर्भकवला0 (4/12)।
4. यस्य त्वया व्रण0 (4/14)।
5. शममेष्यति मम शोकः *(4–21)*।

वीर रस

शाकुन्तल नाटक में वीर रस का वर्णन न्यून रुप में हुआ है। कतिपय अनेक स्थलों पर विविध प्रसंगो में दुष्यन्त की वीरता, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन मिलते हैं।

यथा

1. अध्याक्रान्ता वसति (2/14)।
2. नैतच्चित्रं यदयम्0 (2/15)
3. का कथा बाण0 (3/1)।
4. किं कृतकार्यद्वेषो (5/18)।
5. कृताभिमर्शाम्0 (5/20)।
6. व्यपदेशमाविलयितुं (5/21)।

अद्भुत रस

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के कथानक के कतिपय स्थलों पर अद्भुत रस का वर्ण मिलता है यथा–

1. चतुर्थ अंक में शकुन्तला गर्भिणी प्रसंग में आकाशवाणी की कथा।[11]
2. शकुन्तला की विदाई के समय वृक्षों का रेशमी वस्त्र देना।[12]
3. शकुन्तला को मेनका के द्वारा उठा ले जाना।[13]
4. इन्द्रलोक से मातलि के पृथ्वी लोक पर आने तथा दुष्यन्त के साथ जाने की घटना।[14]
5. मारीच ऋषि के आश्रम में तपस्वी ऋषियों का वर्णन।[15]

हास्य रस

शाकुन्तल नाटक में हास्य रस की प्रस्तुति हेतु विदूषक पात्र उपस्थित है। तथापि अन्य पात्रों में प्रियवंदा अनसूया से शकुन्तला के यौवन विषयक दोष पर हास्य प्रकट करती है।

1. अत्र पयोधरविस्तारियतृ0 (1 वा0 52) ।
2. विदूषक–तापसकन्यका शकुन्तला ममाधन्यतयादर्शिता (2 वा0 1)।
3. विदूषक–किं मोदकखादिकायाम् (2 वा0 19)।

भयानक रस

कालिदास ने शाकुन्तल में केवल तीन स्थलों पर भयानक रस का प्रयोग किया है।

यथा

1. भयभीत मृग के भागने के दृश्य में।[16]
2. रथ को देखते ही भयभीत हाथी के आश्रम में प्रवेश आदि दृश्य में।[17]
3. राक्षसों का आश्रम में भयानक स्वरुप बनाकर मँडराना आदि दृश्य में।[18]

रौद्र रस

शाकुन्तल नाटक में रौद्र रस की निष्पत्ति किसी भी स्थान पर देखने को नहीं मिलती है, परन्तु पात्रों के द्वारा क्रोध भाव एवं आक्रोश भाव आदि प्रकट किये गये हैं।

यथाः क्रुद्ध दुर्वासा ऋषि द्वारा शकुन्तला को शाप देना।

आः, अतिथिपरिभाविनी, विचिन्तयन्ती0 (4–1)।

वात्सल्य रस

शाकुन्तल के सप्तम अंक में दुष्यन्त द्वारा सर्वदमन बालक के स्पर्ष स्नेह में वात्सल्य रस की निष्पत्ति दिखाई पड़ती है।

यथा

आलक्ष्यदन्तमुकुलान्0 (7/17)।
अनेन कस्यापि0 (7/19)।

शान्त रस

सप्तम अंक में ऋषि मारीच के आश्रम वर्णन में कालिदास ने शान्त रस का प्रयोग किया है।

यथा

1. स्वर्गादधिकतरं0 (7/25)।
2. प्राणानाम्0 (7/12)।
3. प्राहुर्द्वादशधा0 (7/27)।

निष्कर्ष

निष्कषतः हम कह सकते है कि आचार्य धनंजय के नाट्य भेदक तत्व वस्तु, नेता तथा रस की दृष्टि से कविकुलगुरू कालिदास का नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् उत्कृष्ट कोटि का नाटक हैं। इसमें पात्रानुसार कथावस्तु रखी गयी है। नायक दुष्यन्त एवं नायिका शकुन्तला के प्रेम, वियोग, पुनर्मिलन वस्तु को सात अंकों में दिखलाया गया है। रसों में कालिदास ने मुख्य श्रृंगार तथा गौण रसों में वीर, हास्य, रौद्र, भयानक, करुण, अद्भुत, वात्सल्य एवं शान्त रसों की अभिव्यंजना की है। कालिदास का शाकुन्तल नाटक भारत का ही नहीं अपितु विश्व का सर्वश्रेष्ठ नाटकरत्न माना गया है इसीलिए समालोचकों ने संस्कृत नाट्य साहित्य में इसे सर्वश्रेष्ठ नाटक बतलाया है –

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

नाट्यशास्त्र में आठ रसों को ही नाटक में प्रदर्शित करने की बात कही गई है फिर भी कवि कालिदास जी ने वात्सल्य और शान्त रस का वर्णन नाटक में किया है जो एक उदात्त नायक दुष्यन्त के चरित्र को उत्कृष्ट बनाने में प्रंशसनीय है।

सन्दर्भ

1. नाट्यशास्त्र/श्री बाबूलाल शुक्ल–1/117
2. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
3. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
4. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/12
5. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/13
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–56
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–56
8. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–2/3
9. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–2/1–2
10. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–2/4–5
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–4/4
12. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–4/5
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–5/30
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–7/8
15. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–7/11
16. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–1/7
17. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–1/33
18. अभिज्ञानशाकुन्तलम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–3/24